ISSN 2320-2858 UGC Journal No. 42684 मई 2023
वर्ष - 11 अंक - 126

श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान
श्री प्रत्यक्ष दर्शी लोकस्य सर्वदर्शी भवेन्नरः

ब्रज लोक संपदा

सौजन्य : गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृन्दावन

चौरासी कोस परिक्रमा में मान सरोवर भ्रमण

~O bmH g|nXm

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

★

सह-संपादक :

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

★

सहयोग :

डॉ. रश्मि वर्मा

★

कला संयोजन :

ब्रज ग्राफिक्स

कार्यालय :

ब्रज लोक संपदा कार्यालय, 302, गुरुकुल रोड, वृन्दावन

मो. : 09410619265, 7017709490

Website : www.brajloksampada.com ⋆ E-mail : brajloksampada@gmail.com

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा द्वारा चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन, मथुरा से मुद्रित कराकर 302, गुरुकुल मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) से प्रकाशित।

ब्रज लोक संपदा भारतीय संस्कृति के मासिक शोध-पत्र की पृष्ठभूमि में हमारा यह सद् प्रयास है कि भारत की क्षेत्रीय कला व साहित्य का प्रज्ञात कलेवर परिवेषण कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता के सूत्र को परस्पर संस्कृति के आदान-प्रदान से पुष्ट करें; इसी से व्यक्ति का व्यक्तिवाद शिथिल होकर समन्वित भाव से लोक अस्मिता के रूप में विकासोन्मुख नव जीवन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

आवेदन - पत्र

कृपया मैं व्रजलोक संपदा पत्रिका का एक वर्ष का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....नकद/चैक/ड्राफ्ट नं.....
दिनांक .....संलग्न है।

श्री/श्रीमती/.....

पिता/पति का नाम.....

जहाँ पत्रिका मंगाना चाहते हो वहाँ का पूरा पता .....

.....

पिन..... दूरभाष/मो०.....

हस्ताक्षर

(कृपया उक्त आवेदन पत्र को हाथ से लिखकर या टाईप कराकर भेज सकते हैं)

सदस्यता शुल्क

एक प्रति- 100/-, एकवर्षीय - 1100/-

विशेष: अपना चैक/ड्राफ्ट: श्रीश्री नरहरि सेवा संस्थान के नाम से
302, गुरूकुल रोड, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., पिन: 281121 पर भेजें।

बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक
शाखा - प्रेम मंदिर के सामने, वृन्दावन
खाता संख्या - 41957705984
आईएफसी कोड - SBIN0016533

प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
शोध पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल मथुरा न्यायालय के अधीन होंगे।

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

ब्रज परिक्रमाओं और यात्राओं की परम्परा श्रीकृष्ण के समय से ही मिलती है। सन् 1571 के उपरांत ब्रज के विविध वैष्णव संप्रदायों के प्रयास से ब्रज के अनेक कंटकाकीर्ण मार्गों को परिक्रमा के योग्य बनाया गया।

ये यात्रा दो प्रकार की होती हैं- प्रथम वन यात्रा, द्वितीय ब्रज यात्रा। इन दोनों का अन्तर समझना आवश्यक है। ब्रज यात्रा के अन्तर्गत ब्रज के गांव का विधि पूर्वक पर्यटन और लीला स्थलों के दर्शन को ब्रजयात्रा कहते हैं। इसका विस्तार 336 कोस है। इसकी अवधि वैशाख कृष्ण पक्ष की एकम से लेकर श्रावण पूर्णिमा पर्यन्त है। ब्रजयात्रा में प्रतिदिन ढाई कोस तक चलना आवश्यक है। इस यात्रा के विश्राम लेने पर रक्षाबन्धन और तर्पणादि करने की मान्यता है।

वन यात्रा के अन्तर्गत 84 कोस के वन उपवनों की विधि पूर्वक परिक्रमा को वन यात्रा कहा जाता है। विष्णुयामल के अनुसार इसे 23 दिन में पूरी करने का विधान है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष जन्माष्टमी से भाद्रपद पूर्णिमा तक इसे करने की मान्यता है।

अन्तर्वस्तु

1. श्रीमद्भगवद् गीता 05

2. श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित मानवता का स्वरूप 06
   – *प्रो. लाला शंकर गयावाल*

3. राजकीय संग्रहालय में लगे चित्रांकन और मूर्तिकला शिविर 14
   – *सुनील शर्मा*

4. चौरासी कोस यात्रा में जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट का महात्म्य 16
   – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*

5. चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग सुधारने के लिए उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रयास तेज 18

6. आधुनिक हिन्दी साहित्य में लोक मंगल 19
   – *डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा*

7. ब्रज की रासलीला और गोस्वामी नारायणभट्ट जी 28
   – *सत्य प्रकाश शर्मा*

श्रीमद्भगवद्गीता

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्य भाव से
मेरा भक्त होकर मुझको भजता है तो वह साधु ही मानने योग्य है,
क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है।
अर्थात् उसने भलीभांति निश्चय कर लिया है कि
परमेश्वर के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है॥9.30॥

श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित मानवता का स्वरूप

प्रो. लाला शंकर गयावाल

'पंचमवेद' के अभिधान से ख्यात महाभारत एक अनुपम धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, सामाजिक और दार्शनिक ग्रन्थ है। यह विश्व का सबसे बड़ा साहित्यिक ग्रन्थ, विलक्षण महाकाव्य एवं लक्षण ग्रन्थ है। यह हिन्दु धर्म के मुख्यतम एवं विशिष्ट ग्रन्थों में से एक है। यह कृति प्राचीन भारत के इतिहास की गाथा है। महाभारत के बारे में कथन है कि जो महाभारत में है वही सर्वत्र उपलब्ध है जो महाभारत में नहीं है वह कहीं भी नहीं है। महाभारत स्वयं अपने विषय में घोषणा कर रहा है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पर जो कुछ लिखा है वही अन्यत्र भी है और जो वहाँ नहीं वह कहीं भी नहीं है। तथाहि-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतवर्ष।

यदिहास्ति तदयन्त्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

अट्ठारह पर्वों में विभाजित इनके विभिन्न पर्वों जैसे वनपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व और अश्वमेध पर्वों में अनेक गीताओं का उल्लेख प्राप्त होता है।

गीता शब्द प्रयोग तात्पर्य एवं प्रतिपाद्य

'गै' धातु में क्त प्रत्यय एवं स्त्रीत्व विवक्षा हेतु टाप् प्रत्यय (गै+क्त+टाप्) से निस्पन्न 'गीता' पद का अर्थ है गाया हुआ या गाकर कथन किया गया। महाभारत युद्ध के समय युद्ध का परित्याग करने की इच्छा पर अर्जुन को श्रीकृष्ण ने जो उपदेश दिया वही गीता है–

सर्वोपनिशदोगावः दोग्धा गोपालनन्दनः।

पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतमृतं महत्॥

अर्थात् समस्त उपनिषद गाय के समान हैं उसके दुहने वाले गोपाल नंदन श्रीकृष्ण है और अर्जुन बछड़ा है (जिसे निमित्त बनाकर इसका दोहन हुआ है।) गीता रूपी महान अमृत दुग्ध है तथा शुद्ध बुद्धि वाला पुरुष इसको पीने का अधिकारी है।

वस्तुतः गीता दिव्य ज्ञान का अमृतमय उपदेश है जिसमें बहुधा गुरु शिष्य के संवाद के रूप में संस्कृत पद्य द्वारा धार्मिक एवं आध्यात्मिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है तथा गुरु कई बार ईश्वर भाव का दर्शन भी कराते हैं। इन गीतों का उद्देश्य ईश्वर की ओर मानव को उन्मुख करना था। पुराणों के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने ऐसे गीतों को भगवान विष्णु का अंशरूप बताया था। उन्होंने विष्णु पुराण में लिखा है–

काव्यालाप च ये किंचित् गीतकान्याखिलानि च।

शब्दमूर्तिधरस्यैते विश्णोरंशा महात्मनः॥

श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का संक्षिप्त रूप है। दूसरे शब्दों में गागर में सागर है। 700 श्लोकों में कहा गया है उसमें भी श्रीकृष्ण के मुख से कहे 574 श्लोक हैं शेष श्लोक संजय तथा अर्जुन के कहे हैं। अट्ठारह अध्यायों के इन सात सौ श्लोकों में छिपे रहस्य को भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को महाभारत युद्ध के दौरान कुरुक्षेत्र के मैदान में बताया है खासकर तब जब युद्ध से ठीक पूर्व अर्जुन मोहग्रस्त हो जाता है और उसके शरीर में कंपन और स्वेदन होने लगता है।

गीता के दूसरे अध्याय में अर्जुन शिष्य रूप में कृष्ण की शरण ग्रहण करता है और कृष्ण उससे नश्वर भौतिक शरीर तथा नित्य आत्मा के मूलभूत अंतर की व्याख्या करते हुए अपना उपदेश प्रारंभ करते हैं। भगवान् उसे देहांतरण की प्रक्रिया, परमेश्वर की निष्काम सेवा तथा स्वरूप सिद्ध व्यक्ति के गुणों से अवगत कराते हैं।

मानवता गुणों के मुख्य तत्व

मानवता मानव का गुणधर्म है जिसके मूल तत्व सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा, दया, त्याग, शुद्धता, नैतिकता, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा आदि हैं। विश्व में प्रेम, शांति व संतुलन के साथ-साथ मनुष्य जन्म को

सार्थक करने के लिए मनुष्य में मानवीय गुणों का होना अति आवश्यक है। **प्रेम**- प्रेम प्रभु का अमूल्य व दिव्य उपहार है। यदि मैं कहूं कि शुद्ध प्रेम में सभी मानवीय ही नहीं दिव्य गुणों का भी समावेश हो जाता है तो अनुचित नहीं होगा। आज भी हम देखते हैं कि जो कार्य किसी से न हो प्रेम से वह कार्य प्रायः हो ही जाता है। **दया**- यदि देखा जाय तो मनुष्य ही नहीं जीव जन्तु भी दया करते है। **क्षमा**- क्षमा करना सदा मनुष्य की महानता को दर्शाता है। **सहनशीलता**- सहनशीलता से व्यर्थ के झगड़े से मुक्ति मिलती है। यह दुःख में स्थिर रहने की शक्ति प्रदान करता है। **शुद्धता**- इस गुण से प्रभावित होकर मनुष्य अपने मन, तन, गृह व समाज को साफ रखने का प्रयास करता है। **सत्य**- सत्यता का गुण उच्चकोटि का गुण है जिसका पालन उच्च आदर्श की ओर ले जाता है। **विवेक**- विवेक गुण से मनुष्य उचित अनुचित का बोध करता है। मानवीय गुणों का सम्पूर्ण समावेश श्रीमद्भगवद्गीता में समाया हुआ है।

गीता में वर्णित मानवता

दिव्य शक्ति का सम्पूर्ण विकास मानवता की सम्पूर्णता में है। विश्व में एक ही सर्वश्रेष्ठ पवित्रतम देवालय है, जिसमें अत्यन्त शक्तिशाली पूर्णता की देवप्रतिमा स्थित है वह देवालय है मानव का शरीर। मानव में पाये जाने वाले गुण ही मानवता के द्योतक हैं। इस मानवता का सबसे सार्थक उपयोग स्वयं के अन्तःकरण में स्थित देवतत्व किं वा आत्मतत्व को जानना है। मानवोचित सार्थक एवं सत्य कर्मों से ही वह अन्तर्निहित आत्मतत्व को प्रसन्न कर सकता है। परस्पर प्रेमपूर्वक सम्मिलन, दर्शन और स्पर्शन से स्वर्ग-सुख का अनुभव मानव को अभ्युदय और निःश्रेयस् की प्राप्ति कराता है।

मानवता के शीतल सुखकर और समुन्नत दृष्टि से विश्व के समस्त संताप शान्त हो जाते हैं। भगवान योगेश्वर श्रीकृष्ण में मानवता की सम्पूर्णता के आदर्श प्रतिमान प्राप्त होते हैं। उनकी सर्वगुणसम्पन्नता, सर्वज्ञता, कर्मकुशलता, कर्तव्यशीलता आदि गुण उनके मानव जीवन की पूर्णता के परिचायक हैं।श्रीमद्भगवद्गीता में मानवता के पर्याय को भगवान श्री कृष्ण ने स्थितप्रज्ञ के रूप में वर्णित किया है। अर्जुन के द्वारा प्रश्न करने पर कि स्थितप्रज्ञ की भाषा क्या है, स्थितप्रज्ञ क्या बोलता है तथा कैसे रहता है और कैसे चलता है तो स्थितप्रज्ञ के स्वरूप का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि जो दुःखों को प्राप्त होने पर उद्वेग रहित मन वाला हो, और सुखों को प्राप्त होने पर नष्ट स्पृहा वाला हो, राग, भय, क्रोध जिसके नष्ट को गये हो ऐसा मुनि ही स्थिर बुद्धि वाला अर्थात् स्थितप्रज्ञ होता है। तथाहि-

दुःखेश्वनुदिग्मनाः सुखेशु विगतस्पृहः।
वीत राग भय क्रोधः स्थितधीर्मुनिरूच्यते॥

साथ ही जिनका मान और मोह नष्ट को गया है, जिन्होंने आसक्ति रूप दोष को जीत लिया है, जिनकी परमात्मा के स्वरूप में नित्य स्थिति है और जिनकी कामनायें पूर्णरूप से नष्ट हो गई हैं वे सुख-दुःख नामक द्वन्द्वों सके विमुक्त ज्ञानीजन उस अविनाशी परमपद को प्राप्त करते हैं। जो पुरुष सर्वत्र स्नेह रहित हुआ, शुभ तथा अशुभ वस्तुओं को प्राप्त होकर न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है। जैसे कछुआ अपने

अंगों को समेट लेता है, वैसे ही पुरुष जब सब ओर से अपनी इन्द्रियों को इन्द्रियों के विषयों से समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर होती है। वही सच्चा मानव कहलाता है।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्ततत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥
यदा संहरते चार्यं कूर्मोंगानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

इस प्रकार शान्ति को प्राप्त हुआ जो पुरुष, सब भूतों में द्वेषभाव से रहित एवं स्वार्थ रहित सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु है तथा ममता से रहित एवं अहंकार से रहित, सुख दु:खों की प्राप्ति में सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करने वाले को भी अभय देने वाला है। ऐसा पुरुष ही स्थितप्रज्ञा वाला कहलाता है यही मानवता का स्वरूप प्रतिपादित होता है।

अद्वेष्टा सर्वभूतानाँ मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी॥

जो ध्यानयोग में युक्त हुआ, निरन्तर लाभ हानि में संतुष्ट है तथा मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किये हुए, मेरे में दृढ़ निश्चय वाला है, वह मेरे में अर्पण किये हुये मन बुद्धि वाला मेरा भक्त मेरे को प्रिय है। ऐसा ही भक्त मानवता के गुणों से युक्त होता है।

संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तःस मे प्रियः॥

जिससे कोई भी जीव उद्वेग को प्राप्त नहीं होता है और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता है, तथा जो हर्ष, अमर्ष, भय और उद्वेगादिकों से रहित है, वह भक्त मेरे को प्रिय है। जो पुरुष आकाँक्षा से रहित तथा बाहर भीतर से शुद्ध और चतुर है अर्थात् जिस काम के लिए आया था उसको पूरा कर चुका है एवं पक्षपात से रहित और दु:खों से छूटा हुआ है, वह सर्व आरम्भों का त्यागी अर्थात् मन, वाणी और शरीर द्वारा प्रारब्ध से होने वाले सम्पूर्ण स्वाभाविक कर्मों में कर्तापन के अभिमान का स्वामी, मेरा भक्त मेरे को प्रिय है। जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ कर्मों के फल का त्यागी है, वह भक्ति युक्त पुरुष मेरे को प्रिय है। जो पुरुष शत्रु मित्र में और मान अपमान में सम है तथा सर्दी गर्मी और सुख दु:खादि द्वन्द्वों में सम है और सब संसार में आसक्ति से रहित है। तथा जो निन्दा स्तुति को समान समझने वाला और मननशील है, अर्थात् ईश्वर के स्वरूप का निरन्तर मनन करने वाला है एवं जिस प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही संतुष्ट है और रहने के स्थान में ममता रहित है, वह स्थिर बुद्धि वाला, भक्तिमान् पुरुष मेरे को प्रिय है।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काँक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानपमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन की जिज्ञासा को शांत करते हुए कहा है कि यह शरीर क्षेत्र कहलाता है और इस शरीर को जानने वाला क्षेत्रज्ञ है। यह कर्म क्षेत्र शरीर है। और यह शरीर क्या है? शरीर इंद्रियों से बना हुआ है। बद्ध जीव इंद्रिय तृप्ति चाहता है। इसलिए उसके लिए यह शरीर क्षेत्र अथवा कर्म क्षेत्र कहलाता है। हे अर्जुन तुम सब क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ अर्थात् जीवात्मा भी मुझे ही जान। यह क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का तत्व ऋषि द्वारा विभिन्न प्रकारों से कहा गया है और विभिन्न वेद मंत्रों के द्वारा भी इसका कथन किया गया है इसका भली-भांति निश्चय करके ही युक्तियुक्त पूर्वक ब्रह्मसूत्र के पदों द्वारा भी प्रतिपादित किया है। पांच इंद्रियों तथा इच्छा, द्वेष, सुख-दुःख, स्थूल देह का पिंड चेतना और धरती इस प्रकार विकारों के सहित या क्षेत्र संक्षेप में कहा गया है।

श्रेष्ठता के अभिमान का अभाव दंभ आचरण का अभाव किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार से नहीं सताना क्षमा का अभाव मनवाणी आदि की सरलता श्रद्धा भक्ति सहित गुरुजन के प्रति सेवा बाहर भीतर की अंतः अशुद्धि अर्थात् अंतःकरण की स्थिरता और मन इंद्रियों सहित शरीर का निग्रह स्वछता पूर्वक शुद्ध व्यवहार से द्रव्य की और उसके अन्य से आहार की तथा तथा यथा योग्य बर्ताव से आचरणों की और जल मृतिका आदि से शरीर की शुद्धि को बाहर की शुद्धि कहते हैं राग द्वेष और कपट आदि विकारों का नाश होकर अंतःकरण का स्वच्छ हो जाना भीतर की शुद्धि कही जाती है ऐसा पवित्र हृदय वाला पुरुष ही विशुद्ध मानव कहलाता है।

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुशा।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्॥

श्रीमदभगवद्गीता के 16 वें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं भय का सर्वथा अभाव, अंतःकरण की पूर्ण निर्मलता, तत्वज्ञान के लिए ध्यान योग में निरंतर दृढ़ स्थिति और सात्विक दान, इंद्रियों का दमन, भगवान, देवता और गुरुजनों की पूजा तथा अग्निहोत्रादि उत्तम कर्मों का आचरण एवं वेद शास्त्रों का पठन-पाठन तथा भगवान के नाम और गुणों का संकीर्तन स्वधर्म पालन के लिए कष्ट सहन और शरीर तथा इंद्रियों के सहित अंतःकरण की सरलता मानवता के श्रेष्ठ लक्षण कहे गये हैं।

मन, वाणी और शरीर से किसी प्रकार से भी किसी को कष्ट ना देना, यथार्थ और प्रिय भाषण, अंतःकरण और इंद्रियों के द्वारा जैसा निश्चय किया हो वैसे का वैसा ही प्रिय शब्दों का कथन, सत्य भाषण कहलाता है। अपना अपकार करने वाले पर भी क्रोध ना होना कर्मों में कर्तापन के अभिमान का त्याग करना, अंतःकरण की उपरति अर्थात चित्त की चंचलता का अभाव, किसी की भी निंदा ना करना, सब भूत प्राणियों में हेतुरहित दया, इंद्रियों का विषयों के साथ संयोग होने पर पर भी उनमें आसक्ति का ना होना कोमलता लोक और शास्त्र से विरुद्ध आचरण में लज्जा और व्यर्थ चेष्टा का अभाव। सच्चे मानवता के गुण बतलाये गये हैं।

अभयं सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥

करने वाली है और मनुष्य को कृष्ण के नित्य धाम को वापस जाने में समर्थ बनाती है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

सब धर्मों का परित्याग करके तुम एक मेरी ही शरण में आओ, मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा, तुम शोक मत करो।

गीता साहित्य की उपयुक्तता

गीतायें भारतीय संस्कृति की अमूल्य एवं अत्यंत उपयोगी साहित्य है जो भारतीय संस्कृति की आधारभूत तथा सर्वमान्य साहित्य होने के कारण न केवल तत्त्व मीमांसीय नैतिक आध्यात्मिक तथा धर्मशास्त्रीय, सामाजिक, राजनैतिक जिज्ञासाओं का समाधान करती हैं, अपितु जीवन के हर पड़ाव एवं क्षेत्र में सर्वाधिक सरल एवं सहज ग्राह्य एवं सर्वमान्य मार्ग को भी प्रदर्शित करती है। गीताएं दिव्य ज्ञान की दार्शनिक जिज्ञासाओं एवं नैतिक समस्याओं एवं आध्यात्मिक प्रश्नों का भली-भाँति समाधान प्रस्तुत करती हैं। उपनिषदों की सारभूता गीतारुपी यह रत्न राशि निश्चय ही अद्‌भुत अनुपम एवं अमूल्य दार्शनिक निधि है यह अत्यंत सरल सहज एवं व्यवहारिक है।

श्री अरविंद ने तो इसे उपनिषद माना है। पंडित मधुसूदन ओझा इसे स्मार्त मानते हैं। गीता के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि वेद, उपनिषद तथा ब्रह्म सूत्र में जिस ज्ञान का वर्णन किया है वही गीता में है तथा जिस प्रकार वह ज्ञान श्रेष्ठतम है वैसे ही गीता का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। इसमें केवल शब्दों का ही संगीत नहीं है, अपितु भावों का भी संगीत है। वेदव्यास ने भावों के संगीत को शब्दों से नियुक्त कर दिया है जिससे मणिकाञ्जन सहयोग हो गया है। श्री अरविंद ने इसे महासंगीत कहा है। कुछ अन्य विद्वानों ने इसे दिव्य संगीत कहा है।

इस प्रकार श्री मद्‌भगवद्‌गीता ने संपूर्ण मानव को मानवता का संदेश दिया है अर्थात् यह बताया है कि मानवोचित श्रेष्ठ गुणों के आचरण से मानव देवत्व को प्राप्त कर लेता है। मानव को संपूर्ण जीवन जीने की कला अगर किसी एक शास्त्र में कहीं उपलब्ध है तो वह है तो वह श्रीमद्‌भगवद्‌गीता ही है। यह गीता आज इतना अधिक प्रासंगिक और लोकप्रिय धार्मिक ग्रंथ हो गया है कि भारत सहित विश्व के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में इसका अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान कार्य प्रमुखता से हो रहा है। लोग श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के जीवन दर्शन को अपना रहे हैं। इतना ही नहीं विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में इस ग्रन्थ का अनुवाद किया गया है। इसके अनुसरण से मानव अपने जीवन को सत्यं शिवं सुन्दरम् करता परमपद को प्राप्त कर भवबंधन से मुक्त हो जाता है।

★★★

राजकीय संग्रहालय में लगे चित्रांकन और मूर्तिकला शिविर

सुनील शर्मा

राजकीय संग्रहालय ने हाल ही में दो बड़ी उपलब्धियां हासिल कीं। उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद् के सहयोग से राष्ट्रीय चित्रांकन शिविर लगाया गया। जिसमें ब्रज की होली के रंग-चित्रों के संग विषय पर विभिन्न प्रदेशों की होली के चित्र बनाए गए।

होली महोत्सव 2023 के अंतर्गत तीन दिवसीय चित्रांकन शिविर के माध्यम से देश के अन्य प्रान्तों की होलियों को केनवास पर स्थान मिला। चित्रांकन शिविर में सात राज्य हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा के 30 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। चित्रकारों ने विभिन्न शैलियों में पेन्टिग बनाई, जिसमें हिमाचल प्रदेश के चम्बा से अंशुमोहन, किशनगढ़ शैली में राकेश वर्मा जयपुर राजस्थान, मुगल शैली में खुश नारायण, नाथद्वारा में दिनेश सोनी भीलवाड़ा राजस्थान, सांझी कला में सौरभ गोस्वामी वृन्दावन, किशन गढ़ शैली में विजय शर्मा वृन्दावन, कांगड़ा शैली में निताई बोस वृन्दावन, वर्ली में विजय सदाशिव म्हासे पालघर महाराष्ट्र, मांडना कला में श्रीमती रेखा अग्रवाल जयपुर राजस्थान, मधुवनी में श्रवण पासवान पटना से, मधुवनी में श्रीमती अर्चना झा नोयडा, वर्ली

में ऋचा कुशवाह भोपाल, वर्ली में किशोर सदाशिव म्हासे पालघर महाराष्ट्र, स्टैंसिल आर्ट में मोहन कुमार वर्मा मथुरा, गौंडी पेंटिंग में हीरामन उवेर्ती भोपाल, गौंडी पेंटिंग में श्रीमती गीतांजलि उवेर्ती भोपाल, पिछवाई में मुकेश कुमावत अजमेर राजस्थान, गौंडी पेंटिंग में संतोष श्याम भोपाल, मांडना में संजय कुमार सेठी अजमेर राजस्थान, सुश्री आकांक्षा अग्रवाल जयपुर राजस्थान, बुन्देली स्टाइल में विनय चित्रकूट, उ0प्र0, फड़कला में मनोज जोशी चित्तौड़गढ़ राजस्थान, शेखावटी कला में नन्द किशोर भीलवाड़ा राजस्थान, पट्टचित्र शैली में सुश्री गीतांजलि दास पुरी उड़ीसा, फड़कला में चन्द्रशेखर अजमेर राजस्थान, गोदना पेंटिंग में संतोष कुमार मधुबनी बिहार सभी ने अपनी-अपनी शैली में चित्रों को मूर्त रूप प्रदान किया। विभिन्न प्रान्तों से आये कलाकारों का आभार राजकीय संग्रहालय के उप निदेशक यशवन्त सिंह राठौर ने किया।

राजकीय संग्रहालय मथुरा में मूर्ति कला को पुनः विकसित करने के लिए दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें ब्रज के महान संतों की मूर्तियां बनायी गयीं। राजकीय संग्रहालय के सभागार में मूर्तिकला शिविर का शुभारम्भ सांसद हेमा मालिनी ने किया।

उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी नगेंद्र प्रताप और राजकीय संग्रहालय के उप निदेशक यशवन्त सिंह राठौर की देखरेख में ये मूर्तियां बनीं।

यहाँ पर मूर्तिकारों ने चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य, मीरा बाई, स्वामी हरिदास जी आदि 20 संतों की प्रतिमाएं बनाई। इन सभी संतों ने वृन्दावन में आकर कृष्ण भक्ति, साधना तथा अपनी रचनाओं, कविताओं से अपना पूरा जीवन यहाँ के लिए समर्पित कर दिया था। ऐसे महान संतो की यहाँ पर मूर्तियां बनीं, जिन्हे ब्रज क्षेत्र में जगह-जगह रखा जायेगा। इन्हें बनाने वाले कलाकारों के योगदान को भी हमेशा-हमेशा याद किया जाता रहेगा।

★★★

चौरासी कोस यात्रा से जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट का महात्म्य

- 40 दिन में पैदल लगती है परिक्रमा।
- अधिक मास में परिक्रमा लगाने से कई गुना ज्यादा फल।

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

यूं तो ब्रज चौरासी कोस यात्रा वर्ष भर लगायी जाती है लेकिन अधिकमास में इस यात्रा का फल कई गुना बढ़ जाता है। वर्ष 2023 में दो सावन माह हैं। अत: अधिकमास में परिक्रमा, दान, पुण्य आदि धार्मिक कार्य ज्यादा होते हैं। इस प्रकार ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा में देश भर से श्रद्धालु उमड़ते हैं। ये यात्रा चालीस दिन में पूरी होती है।

कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं से ही नहीं, सतयुग में भक्त ध्रुव ने यही आकर नारद जी से गुरू मंत्र लेकर अखंड तपस्या की व ब्रज परिक्रमा की थी।

त्रेतायुग में प्रभु राम के लघु भ्राता शत्रुघ्न ने मधु पुत्र लवणासुर को मार कर ब्रज परिक्रमा की थी।

ब्रज की चौरासी कोस की परिक्रमा का बहुत महत्व है। ब्रज भूमि भगवान श्रीकृष्ण एवं उनकी शक्ति राधा रानी की लीला भूमि है। इस परिक्रमा के बारे में वारह पुराण में बताया गया है कि पृथ्वी पर 66 अरब तीर्थ हैं और वे सभी चातुर्मास में ब्रज में आकर निवास करते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से जुड़े 1100 सरोवरों का उल्लेख भी पुराणों में मिलता है।

ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा मथुरा के अलावा राजस्थान और हरियाणा के होडल जिले के गांवों से होकर गुजरती है। 268

किलोमीटर परिक्रमा मार्ग में परिक्रमार्थियों के विश्राम के लिए 25 पड़ाव स्थल हैं। इस पूरी परिक्रमा में सैकड़ों गांव पड़ते हैं। ब्रज में कृष्ण की लीलाओं से जुड़े 36 वन-उपवन, पहाड़-पर्वत पड़ते हैं। इस यात्रा मार्ग में 12 वन, 24 उपवन, चार कुंज, चार निकुंज, चार वनखंडी, चार ओखर, चार पोखर, 365 कुण्ड, चार सरोवर, दस कूप, चार बावरी, चार तट, चार वटवृक्ष, पांच पहाड़, चार झूला, 33 स्थल रास लीला के तो हैं ही, इनके अलावा कृष्णकालीन अन्य स्थल भी हैं।

चौरासी कोस यात्रा मार्ग मथुरा, अलीगढ़, भरतपुर, अलवर, पलवल की सीमा तक में पड़ता है। इसका अस्सी फीसदी हिस्सा मथुरा में है। बालकृष्ण की लीलाओं के साक्षी तमाम स्थल और देवालयों के दर्शन भी परिक्रमार्थी करते हैं। परिक्रमा के दौरान श्रद्धालुओं को यमुना नदी को दो स्थानों पर पार करना होता है। पहला गोकुल और दूसरा पलवल के हसनपुर पर। यहां से यमुना पार कर अलीगढ़ की टप्पल की सीमा में प्रवेश करना पड़ता है।

अधिकमास के अलावा अन्य यात्राएं ज्यादातर चैत्र, बैसाख मास में ही होती हैं। बहुत से भक्त ये परिक्रमा चैत्र पूर्णिमा से बैसाख पूर्णिमा तक करते हैं। कुछ लोग आश्विन माह में विजया दशमी के पश्चात शरद् काल में परिक्रमा आरम्भ करते हैं।

मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने मैया यशोदा और नंदबाबा के दर्शनों के लिए सभी तीर्थों को ब्रज में ही बुला लिया था। चौरासी कोस की परिक्रमा लगाने से चौरासी लाख योनियों से छुटकारा पाने का फल मिलता है। ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा लगाने से एक-एक कदम पर जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि इस परिक्रमा के करने वालों को एक-एक कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। साथ ही जो व्यक्ति इस परिक्रमा को लगाता है, उस व्यक्ति को निश्चित ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गर्ग संहिता में कहा गया है कि यशोदा मैया और नंद बाबा ने भगवान श्रीकृष्ण से चार धाम की यात्रा की इच्छा जाहिर की। साथ ही में गंगा स्नान की भी इच्छा जतायी। परम पावनी यमुना में तो नित्य प्रति स्नान होता ही था, गंगा स्नान की अभिलाषा को भगवान श्रीकृष्ण ने पूरा कराया। श्रीकृष्ण ने कहा था कि मैं आप के लिए यहीं सभी तीर्थों और चारों धामों को आह्वान कर बुला देता हूं। उसी समय से केदारनाथ और बद्रीनाथ भी यहां मौजूद हो गए।

चौरासी कोस के अंदर राजस्थान की सीमा पर मौजूद पहाड़ पर केदारनाथ का मंदिर है। इसके अलावा गुप्त काशी, यमुनोत्री और गंगोत्री के भी दर्शन यहां श्रद्धालुओं को होते हैं। तत्पश्चात यशोदा मैया व नन्द बाबा ने उनकी परिक्रमा की तभी से ब्रज में चौरासी कोस की परिक्रमा की शुरूआत मानी जाती है।

★★★

चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग सुधारने के लिए उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रयास तेज

ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा को दो अलग-अलग चरणों में नये सिरे से बनाये जाने का प्रस्ताव है। इसके लिए अन्तर्वेदी एवं वहिर्वेदी बनेंगी। इसके लिए उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद एवं सांसद हेमा मालिनी लगातार प्रयासरत हैं। सांसद ने अप्रैल 2022 में स्वयं पड़ाव स्थलों का निरीक्षण किया था। इसके उपरांत मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के आदेश पर परिषद की टीम द्वारा बाहर की परिक्रमा का सर्वे किया गया।

सांसद हेमा मालिनी ने चौरासी कोस ब्रज यात्रा के पड़ाव देखने के लिए 14 अप्रैल 2022 से 18 अप्रैल 2022 तक संपूर्ण चौरासी कोस मार्ग का वाहन से भ्रमण किया। उनके साथ उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के उपाध्यक्ष शैलजाकांत मिश्र एवं परिषद की टीम साथ रही। अपनी यात्रा के दौरान उन्हें यात्रा मार्ग में कई खामियां मिली। हेमा मालिनी ने बताया कि उन्होंने ब्रज यात्रा के दौरान 43 गांवों और 32 पड़ाव स्थल का दौरा किया और ज्यादातर जगह की हालत दयनीय है। पूरे परिक्रमा मार्ग पर कहीं भी टॉयलेट न होने की वजह से महिलाओं को परेशानी का सामना करना पड़ता है। सांसद ने कहा कि जल्द ही परिक्रमा मार्ग पर शौचालय बनाए जाएंगे।

जनवरी 2023 में मंत्री नितिन गडकरी ने कहा था कि ब्रजचौरासी कोस यात्रा के लिए परिक्रमा मार्ग सुधारने पर सहमति बन गयी है। इसके लिए भारत सरकार पूरा खर्चा उठायेगी।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में लोक मंगल

डॉ. उमेश चंद्र शर्मा

लोक मंगल की भावना में मानव के सुख दुख का चिन्तन प्रमुखता से निहित होता है। जहाँ व्यष्टि में समष्टि और समष्टि में व्यष्टि का चिंतन विद्यमान है, जहाँ व्यक्ति हित या मंगल की बात होगी, वहाँ समष्टि अर्थात् लोक की बात स्वमेव आ जायेगी और यही बात लोक और व्यक्ति के सम्बन्धों पर भी समान भाव से मान्य है।

शब्द, अर्थ, रस और मंगल यही तो कविता के प्रमुख तत्व हैं, रस आनन्द का पर्यवसायी होता है इसलिये उसके भीतर मंगल या श्रेय आप से आप निहित रहता है, भारतीय परंपरा में काव्य मंगल की ओर उन्मुख रहता है।

कविता वह साधना है, जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा का निर्वाह होता है। अत: कविता की उपासना रागात्मक है, यह रागात्मकता ही मंगल भावना का पोषक तत्व है, जब किसी का किसी से रागात्मक सम्बन्ध स्थापित होता है तब वह उसका मंगल चाहता है, यह कथन कथमपि अतिरंजित न होगा कि समूचे जगत की आधार शिला प्रेम पर आधारित है, क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि में "तत्सुखी सुखित्व" ही महिमा मंडित है।

चातक बादल को क्यों चाहता है ? केवल इसलिये नहीं कि वह उसे अच्छा लग रहा है या उसका कल्याण करने वाला है, प्रत्युत इसलिये कि वह सारे लोक का मंगल करने वाला है, और बादल भी ऐसा है जो जल देता है, तो चातक की पुकार पर वह केवल चातक का ही मंगल नहीं करता सारे लोक का मंगल करता है। संसार में अहंकार अभिमान के कारण अमांगलिक स्थिति उपस्थित हो जाती है। ज्यों-ज्यों मानव जीवन आदि कालीन स्थिति से आगे बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों उसका सहज स्वरूप आच्छन्न होता जा रहा है, अरण्य जीवन में जितनी सहजता थी, उतनी ग्राम्य जीवन में नहीं रह गई और ग्राम्य जीवन में जितनी सहजता बच गई थी, वह नागरिक जीवन में लगभग ढक गई, आधुनिक यान्त्रिक व सांपत्तिक युग में अधिकतर व्यक्तियों का मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है।

परिवर्तन शील जगत अपनी नैरन्तर्यता से सदैव अलंकृत होता रहा है, 1850 का वर्ष सामान्त वादी और पूंजी वादी व्यवस्थाओं के संघर्ष का समय था- सामान्तवाद का पतन और पूंजीवाद के साथ साम्राज्यवाद और उपनिवेश वाद का आगमन हुआ। इसी समय हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल और रीतिकाल विश्राम लेते हैं और आधुनिककाल का आविर्भाव होता है।

1850 में बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ, यही वह समय था जब ईस्ट इंडिया कम्पनी विदाई ले रही थी और इंलैण्ड की पार्लियामेंट का शासन उभर रहा था।

तात्कालीन परिस्थितियों से संघर्ष रत भारतीय वीरों के मनोबल को बढ़ाते हुये एक सामान्य कवि बजरंग भट्ट का यह छंद प्रस्तुत है–

हिम्मत को हाकिम हजारन में देखि आयौ
खेदिके हटायो अंगरेज हू सकाना है।
जाको तेज तीन तपत महि मण्डल में,
हटि जे उलूक से न लागत ठिकाना है।
कहै बजरंग वैस वंश अवतंश भयौ,
कंपनी विलाइत सकल विललाना है।
नेक न डेराना छीन लीन्हौं तोपखाना,
वीर बाँधे वीर बाना वैस राना विरदाना है।

भारतीय राष्ट्रीय बोध की तीव्र अनुगूंज श्रीधर पाठक की हिन्द वंदना में सुनाई पड़ती है–

जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द
जय जयति जयति प्राचीन हिन्द

पं. प्रताप नारायण मिश्र की ये पंक्तियाँ सदैव राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में प्रासंगिक रहेंगी–

प्रीति परस्पर राखहु मीत।
जाइगें सब दुख सहजहिं बीत॥
नहिं एकता सरिस बल कोय।
एक-एक मिलि ग्यारह होय॥

अंग्रेजों के द्वारा भारतीयों के शोषण का यह शब्द चित्र भारतेन्दु बाबू द्वारा प्रस्तुत है–

भीतर भीतर सब रस चूसैं,
हंसि हंसि कै सब तन धन मूसैं।
जाहिर बातन में अति तेज,
क्यों सखि सज्जन नहि अंग्रेज॥

अग्रेजों से प्रभावित होकर नवयुवक मदिरापान करने लग गये थे। हरिश्चन्द्र जी का व्यग्य बाण प्रस्तुत है–

मुँह जब लागे तब नहीं छूटे,
जाति मान धन सब कछू लुटै
पागल करि मोहि करै खराब,
क्यों सखि सज्जन नहीं सराब

यही नहीं अपनी सुरक्षा के लिये अंग्रेजों ने अफगान युद्ध में भारतीय सैनिकों को ही नहीं भेजा। उसमें जितना धन व्यय हुआ उसे भी भारतीयों से ही बसूला- बाबू भारतेन्दु ने इस कपट पूर्ण नीति का भण्डा फोड़ कर सभी को निम्न पक्तियों में अवगत कराया-

सुजस मिलै अंगरेज को होय रूस की रोक
बढै ब्रिटीस वाणिज्य पै हमको केवल सोक
भारत राज मॅझार जौ कहुँ काबुल मिलि जाइ
जज्ज कलक्टर होइ है हिन्दू नहिं तित धाइ
ये तो केवल मरन हित द्रव्य देन हित हीन
तासों काबुल-युद्ध सों ये जिय सब मलीन

इस प्रकार 1850 से 1900 तक 50 साल का काल खण्ड भारतेन्दु युग माना गया है, इसके साथ ही द्विवेदी युग प्रारम्भ होता है, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने व्रजभाषा के स्थान पर काव्य की भाषा खड़ी बोली को स्थान प्रदान किया आपने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया।

हमारे देश की संस्कृति सांप्रदायिक एकता की जननी है, यहाँ सहिष्णुता और प्रेम का औदार्य परस्पर के व्यवहार में प्रगाढ़ता हेतु सदैव यहाँ की मनीषा का भाव रहा है, इसी क्रम में पद्मभूषण मैथिली शरण गुप्त की ये पक्तियाँ दृष्टव्य है-

राम-रहीम बुद्ध ईसा का, सुलभ एक सा ध्यान यहाँ।
भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के गुण गौरव का ज्ञान यहाँ॥

अछूतों को उनके स्वाभिमान और कर्तव्य से अवगत करवाकर, उन्हें उर्जस्वित करना आवश्यक था- प्रस्तुत है-

दलित बन्धु शुचिता के दूत
उठो कि छू मन्तर हो छूत
करो अपूर्व अछूते कर्म
छू न सकें हॉ तुम्हें विधर्म।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जहाँ युग पुरुष थे, वहाँ मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्र कवि थे। राष्ट्र भाषा तथा भारतीय भाषाओं को ये देश की एकता की कड़ी मानते थे।

सबके अपने गीत किन्तु गति समलय बिना मचलती है।
प्रादेशिक भाषओं में ही राष्ट्र भारती पलती है॥

राष्ट्र प्रेम की भावना से कवि का हृदय गद्‌गद् है-

क्षमा मयी तू दया मयी है, क्षेम मयी है,
सुधा मयी वात्सल्यमयी, तू प्रेम मयी है

विभव शालिनी विश्व पालिनी दुखहर्ती है,
भय निवारिणी शान्ति कारिणी सुख कर्ती है।
हे शरण दायिनी देवि, तू करती सबका त्राण है
हे मातृ भूमि, संतान हम, तू जननी, तू प्राण है।

स्वर्गारोहण काव्य में कवि के हृदयस्थ लोक मंगल का उदधि चरम की ओर परिलक्षित है–

कर ले अदृष्ट तू मन मानी
मैं तुझे चुनौती देता हूँ,
संसार सुखी हो ला उसके
सबके दु:ख ललक कर लेता हूँ।

स्वार्थी और असत्य बोलने वालों के हृदय को द्विवेदी जी का यह व्यंग्य वाण विदीर्ण कर रहा है–

नित्य असत्य बोलने में जो तनिक नहीं सकुचाते हैं।
सींग क्यों नहीं उनके सिर पर बड़े-बड़े उग आते हैं।
घोर घमंडी पुरुषों की क्यों टेड़ी हुई न नाक।
चिन्ह देख जिसमें सब उनको पहचाने निशंक।

द्विवेदी जी ने समस्त व्यावसायिक सम्भ्रान्त बुद्धिजीवी वर्ग के मनोभावों एवं व्यापारों का एक संशलिष्ट बिम्ब अंकित किया है–

हाकिम अहलकार वैरिस्टर
सब बिठलाये तेरे खातिर
वैद हकीम डाक्टर सर्जन
जो हैं सब रोगी के दुश्मन।

इसी युग के राय देवी प्रसाद पूर्ण जी की ये पंक्तियाँ आज के जीवन को कितनी मार्मिक बनकर स्पर्श कर रहीं हैं–

सरकारी कानून का रखकर पूरा ध्यान
कर सकते हो देश का सभी तरह कल्याण
सभी तरह कल्यान देश का कर सकते हो
करके कुछ उद्योग सोग सब हर सकते हो

अठारह वर्ष की सेवा प्रदान करने के पश्चात् इस युग का यवनिका पतन हुआ और नवीन ऊर्जावान संकल्प के साथ नूतन युग की प्रभाती के स्वर वातवरण को आत्मसात करने लगते हैं। जिसे छायावाद के नाम से अभिहित करते हैं–

छाया वाद में व्यापक रूप से वैश्विक क्षेत्र तथा मानवता की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है, इसमें एक नई सांस्कृतिक भावना का उन्मेष है तथा स्वतंत्र जीवन दर्शन की स्थापना की गई है। छायावादी कवियों में भारतीय संस्कृति तथा मातृ भाषा हिन्दी के शसक्त स्वरूप का दर्शन है। राष्ट्र प्रेम की कर्ण प्रिय भाव धारा का प्रवाह है, आइये अवगाहन करते हैं–

हिमाद्रि तुंग श्रंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रा पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो

स्वदेश प्रेम से संवलित भावना छाया वादी युग में तात्कालीन परिस्थितियों के प्रति भी सहज रही–

जीयें तो सदा इसी के लिये,
रहे अभिमान रहे ये हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व,
हमारा प्यारा भारत वर्ष।

मानवता वादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत प्रसाद जी जीओ और जीने दो का उद्घोष करते दिखाई देते हैं–

क्यों इतना आतंक ठहर जा ओ गर्बीले।
जीने दो सबको फिर तू भी सुख से जी ले॥

भाव भाषा के गुरु गम्भीर चितेरे प्रसाद जी विश्वव्यापी मानवता चित्रण करते हुये अखिल मानव भावों के सत्य को चेतना का सुन्दर इतिहास बताते हैं–

चेतना का सुन्दर इतिहास,
अखिल मानव भावों का सत्य।
विश्व के हृदय पटल पर दिव्य,
अक्षरों से अंकित हो नित्य।

सुमित्रानंदन पंत जी मानवता के पुजारी हैं, समाजवाद उनकी ष्टि में राजनीति म नहीं प्रत्युत सांस्कृतिक उत्थान का साधन है–

राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज जगत के सम्मुख,
एक वृहत सांस्कृतिक समस्या जग के निकट उपस्थित।

वास्तव में पंत जी व्यक्ति चेतना और लोक चेतना में समन्वय स्थापित करना चाहते हैं, जो दर्शन सामुहिक मुक्ति दिला सकें; वह चाहते हैं–

वृथा पूर्व-पश्चिम का दिग्भ्रम मानवता को करे न खण्डित
बहिर्नयन विज्ञान हो महत् अन्तर्दृष्टि ज्ञान ते योजित।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी ने अद्वैतवादी स्वरूप को ग्रहण किया है- यह झलक उनकी रहस्यवादी रचनाओं में मिलती है- साथ में माधुर्य भाव भी विद्यमान है। "रेखा" में निराला जी ने प्रथम प्रेम का जो विम्बन किया है वह एक ही चेतन सत्ता की अनुभूति को रूपायित करता है-

खींचा उसी ने था हृदय यह
जड़ों में चेतन गति कर्षण मिलता कहाँ।

राम की शक्ति पूजा में द्वन्द्वग्रस्त राम को स्मरण हो उठता है कहती थी माता मुझे सदा राजीव नयन जैसे ही राजीव नयन चढ़ाने को उद्यत होते हैं, देवी प्रगट हो जाती है और उन्हें वरदान देती है-

होगी जय होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन

महादेवी वर्मा भावुक एवं संवेदनशील कवयित्री थी। आपकी कविताओं में अनुभूति की तीव्रता है। इनका रहस्यावादी रूप इनकी रचनाओं में पूर्ण रूप से प्रकट हुआ है, इनका चिरन्तन प्रिया वाह्य समूचे जगत में लीला कर रहा है। प्रकृति के कण कण में वे अपने प्रियतम की सत्ता देख रही हैं।

महादेवी जी ने प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से संसार की क्षण भंगुरता एवं निस्सारता का बोध कराया है।

मैं नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कोई अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली

ब्रह्म जीव का एकत्व प्रतिपादित करती हुई महादेवी जी द्वारा रचित क्या पूजन क्या अर्चन रे।

क्या पूजा क्या अर्चन रे
उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे।
मेरी श्वासें करती रहती नित प्रिय का अभिनन्दन रे।

माखन लाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय कविताओं में अन्याय और अत्याचार पर गहरा आक्रोश दिखलाई पड़ता है-

काली तू, रजनी काली, शासन की करनी भी काली।

छायावादी काल में काव्य का सर्वतोमुखी विकास हुआ है, इस आलोच्य काल में छाया वाद एक प्रमुख काव्य धारा अवश्य रही है, पर उसके साथ साथ राष्ट्रीय सांस्कृतिक, हास्य व्यग्य-काव्य धारा का भी विकास हुआ। काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली सरस, सुकुमार एवं सुष्ठु बन गई। इस प्रकार यह उत्कर्ष काल किंवा हिन्दी का स्वर्णकाल भी कहा गया। इसकी अवधि 1918 से 1938 है। इसके पश्चात् इसी के भावों की फुनगी से प्रतिक्रिया का प्रस्फुटन हुआ और प्रगतिवाद के नाम से साहित्यिक आन्दोलन उदय हुआ।

सुमित्रानन्दन पन्त जी प्रगतिवादी युग में नये विचार नये भाव, नवीन सौन्दर्य और नव जीवन, नूतन संस्कृति का स्वागत करते हुये "युगान्त" में घोषणा करते हैं–

द्रुत झरो जगत जीर्ण पत्र,
हे त्रस्त-ध्वस्त! हे शुष्क-शीर्ण
हिम ताप पीत मधुपात भीत
तुम वीतराग जड़ पुराचीन॥

प्रगतिवाद काव्य मार्क्सवादी दर्शन से प्रतिबद्ध काव्य है, रूस की क्रान्ति से प्रभावित कवि साम्यवादी व्यवस्था को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। नागार्जुन का यह विम्ब जो गोर्की के कार्यों पर आधारित है–

जुझारू श्रमिकों के अभियान का
देखे उसी बुढ़िया ने पहले-पहल
अपने आस-पास, नयी पीढ़ी के अन्दर
विश्व क्रान्ति, विश्व क्रान्ति, विश्व कल्याण।

मार्क्सवाद के प्रबल समर्थक कवि मुक्ति बोध ने व्यक्तिवाद प्रर्वत्ति पर गहरा व्यंग्य किया है–

आधुनिक सभ्यता के वन में
व्यक्तित्व-वृक्ष-सुविधावादी।

शोषण से केवल मानवता की ही क्षति नहीं होती अपितु सभ्यता भी मर जाती है–

शोषण की अतिमात्रा, स्वार्थों की सुखयात्रा
जब जब सम्पन्न हुई, आत्मा से अर्थ गया, मर गई सभ्यता

इस युग की कविता में मानवता वादी दृष्टिकोण की प्रधानता है– नरेन्द्र शर्मा की ये पंक्तियां देखें–

जाने कब तक घाव भरेंगे, इस घायल मानवता के।
जाने कब तक सच्चे होंगे, सपने सबकी समता के॥

भस्माकुंर काव्य कृति में नागार्जुन भारत की वर्तमान समस्याओं के प्रति उदासीन नहीं है, चाहे यह पौराणिक आख्यान। आपने रति के शब्दों में अनमेल विवाह की आलोचना करायी है–

मुझको तो प्रिय लगता है बेकार
सारा नाटक आखिर वह सुकुमारि
क्यों बूढ़े को करने लगी पसन्द
क्या अनमेल समागम है अनिवार्य
सुर-समाज की बुद्धि हो गई भ्रष्ट

भस्माकुंर के नायक कामदेव का चरित्र परोपकारी देवता का चरित्र है, वह अपने लिये कुछ नहीं वरन दूसरों के लिये सब कुछ करना चाहते हैं। उसका नाम कामदेव अवश्य है, परन्तु अपने लिये नहीं अपितु परहित

जनाय, उसका जीवन शिव की यर्थाथ कहानी है, वह अपने प्राणों की आहूति देकर दूसरों के काम आना चाहता है–

अपनों के हित आँऊ यदि काम,
समझूंगा सार्थक है अपना नाम।

प्रगतिवाद ने अध्यात्म के स्थान पर भौतिकवाद की प्रतिष्ठा की, दलितों को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये नव जागरण का सन्देश दिया। यही लोक मंगल किंवा मानवता वाद है।

प्रगतिवाद के समानान्तर ही हिन्दी में कविवर हरिवंशराय बच्चन मधुशाला–मधुबाला और मधुकलश के द्वारा जीवन–समर के मध्य खड़े होकर मधु–गीत गुनगुनाने की देशना दे रहे थे, सुपरिचित प्रतीकों के माध्यम से दर्शन को छन्दोबद्ध कर रहे थे–

मदिरालय जाने को घर से, चलता है पीने वाला,
किस पथ से जाऊँ, असमंजस में है वो भोला भाला।
अलग–अलग पथ बतलाते सब, पर मैं यह बतलाता हूँ,
राह पकड़ तू एक चला चल, पा जायेगा मधुशाला।

1936–1943 तक समूचे राष्ट्र में तीव्र गति से परिवर्तन आ रहा था, सर्वत्र निराशा और अशान्ति व्याप्त थी, इन परिस्थितियों में पूँजीवाद और साम्यवाद के विरोध में प्रयोगवाद का उदय हुआ। इसके अन्तर्गत सात–सात कवियों के तार सप्तम चार प्रकाशित हुये। 1976 में अन्तिम चौथा सप्तक प्रकाशित हुआ।

प्रयोगवादी कवि रहस्यवादी तो है पर उसका रहस्यवाद आध्यात्मिक न होकर उसका अपना है, प्रयोगवाद के पुरस्कर्त्ता अज्ञेय ईश्वर शक्ति की जगह आत्मिक शक्ति की खोज करते हैं, ये अन्वेषी हैं–

मैं भी एक प्रवाह में हूँ
लेकिन मेरा रहस्यवाद ईश्वर की ओर उन्मुख नहीं है।
मैं उस असीम शक्ति से सम्बन्ध जोड़ना चाहता हूँ,
अभिभूत होना चाहता हूँ, जो मेरे भीतर है।

प्रयोगवाद की ही एक भाव धारा के रूप में नई कविता का पल्लवन हुआ– भवानी प्रसाद मिश्र गीत फरोश में आर्थिक विषमताओं के कारण गीत बेचने की बात कहते हैं–

है गीत बेचना वैसे बिलकुल पाप
क्या करूँ मगर लाचार हारकर
गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ,

विधाओं के पल्ल्वन की दृष्टि से समकालीन कविता का यह युग हिन्दी साहित्य का अभिनव स्वर्णयुग है। छन्द गीत–नवगीत–नई कविता–दोहे–गजल–हाइकू आदि सभी नवल और पुरातन विधाओं में कारयित्री

प्रतिभाएँ सजगता के साथ सक्रिय हैं और फेसबुक आदि नई सुविधाओं के कारण कविता आज जागरण की प्रभाती, दोपहर का छाया–गीत तथा अन्ततः निशा– निमन्त्रण की सहचरिणी पंक्तियों में बदल रही हैं।

कविवर नीरज जी की ये पंक्तियाँ–

जिस उँगली ने उठकर यह अंजन आँजा है
उसको तो पता बता सकते कुछ नयन, किन्तु!
किस आँसू से पुतली उजली हो जाती है
ये बात स्वयं काजल को भी मालूम नहीं।
उसकी अनगिन बूँदों में स्वाती बूँद कौन,
यह बात स्वयं बादल को भी मालूम नहीं।

कविवर डॉ. कुँअर बेचैन का काव्यानन्द–

दुनिया ने मुझपे फेंके थे पत्थर जो बेशुमार
मैंने उन्हीं को जोड़ के कुछ घर बना लिये।
सण्टी की तरह मुझको मिले जिन्दगी के दिन,
मैंने उन्हीं में बाँसुरी के स्वर बना लिये।

कविवर लक्ष्मीशंकर बाजपेई की बोलती हुई कविता–

न कोई बोल पाये जब, तो कविता बोल देती है
अँधेरे में ये खिड़की रोशनी की खोल देती है,
ये ताकत भी है कविता में, अगर सचमुच वो कविता है
वो मरते आदमी में, जिन्दगी-सी घोल देती है।

और अन्त में कविवर देवल आशीष की सुवास सुरभित ये शब्द–

विश्व को मोहमयी महिमा के असंख्य स्वरूप दिखा गया कान्हा
सारथी तो, कहीं प्रेमी बना, तो कहीं गुरुधर्म निभा गया कान्हा
रूप विराट धरा तो धरा, तिहुँ लोक में छा गया कान्हा
रूप धरा लघु तो इतना कि यशोदा की गोद में आ गया कान्हा।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में लोक मंगल की संभूति धारा का प्रवाह सतत की ओर प्रवहमान है।

★★★

ब्रज की रासलीला और गोस्वामी नारायणभट्ट जी

सत्य प्रकाश शर्मा

कहा जाता है कि श्री चैतन्यमहाप्रभु के शिष्यों ने ब्रज के तीर्थों को प्रकट किया और उनकी स्थापना की, किन्तु इस कार्य का श्रेय अधिकांश श्री नारायण भट्ट जी को है। इसके अनेक प्रमाण मिलते है। भट्टजी की घराने की शिष्य परम्परा में गोस्वामी जानकीदास जी द्वारा रचित "नारायण भट्ट चरितामृत" के आधार पर।

ब्रज में रासलीलानुकरण का जो आजकल की रीति पर चल रहा है उसे सर्वप्रथम प्राकट्य कराकर उसकी धारा को सर्वत्र फैलाया। आजकल में या अन्यत्र जो रासलीलानुकरण का प्रचलन हो रहा है, वह केवल भट्टजी की कृपा से जानना चाहिए।

इसके आधार के लिए कुछ साक्ष्य इस प्रकार है–

श्रीराधाबल्लभी सम्प्रदायुनायी महात्मा ध्रुवदास जी की नामावली में –

भट्ट नारायण अति सरस ब्रजमंडल सौ हेत।

ठौर-ठौर रचना करी प्रकट कियौ संकेत॥

रास के आदि में समाजी वचन, जिसको रासमंडली रस के प्रारम्भ में गाती है।

राधाकृष्णजी भक्त नामावली –

ग्रियर्सन के मतानुसार श्री भट्टजी ने ब्रज के स्थानों को प्रकट किया और रासलीला प्रारम्भ करायी। उन्होंने भक्तमंडली लीलानुकरण का सुख देने के लिए रासपद्धति का आवशयकार किया। जिससे ब्रज की गान,वाद्य और नृत्यकलाओं की उन्नति के साथ यहाँ की नाट्यकला का एक विशिष्ट रूप उपस्थित किया।

ततः प्रभृति सर्वत्र बनेषु पवनपु च।

ब्रज तीर्थपु कुंजेसु रासलीला बभूवः॥

(श्री नरायणभट्ट चरितामृत)

ग्राउस ने भी अपनी किताब A District Memoier मथुरा में लिखा है– Narayan bhatt who established first Banjatraa and Rasleela.

भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजी –

ठौर ठौर रास के विलास लै प्रकट किये,

जिए यौ रसिकजन कोटि सुख पाए है।

और भी अनेक साक्ष्य अवश्य होंगे, जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि श्री नारायण भट्टजी रासलीला के आचार्य है।

ब्रज में जहाँ–जहाँ रासस्थली है, उन सबका उल्लेख भट्टजी ने ब्रजभक्ति विलास में किया है। उन सब स्थलों में भट्टजी ने रासमण्डल हिंडोलादिक निर्माण कराये। राजा टोडरमल ने इन सबको बनवाने में प्रचुर मात्रा में धन लगाया।

भट्टजी द्वारा प्राकट्य प्राप्त रासस्थली समूह निम्न है।

1. गढबन (शेरगढ़), 2. ऊँचा गाँव, 3. मोरकुटी, 4. गहरबन,

5.जावट, 6. विहारबन, 7. कोकिलाबन, 8. कदंबबन,

9. स्वर्णबन, 10. प्रेमसरोवर, 11. वृंदावन, 12. करहला,

13. पिसाई, 14. परासौली, 15. राधाकुंड।

ब्रजभक्ति विलास में भट्टजी द्वारा प्राकट्य प्राप्त रासस्थली समूह के प्रार्थना मंत्रो का भी उल्लेख किया गया है, जो रासलीला स्थली समूहों के अनुसार भिन्न–भिन्न है।

गढ़ वन (शेरगढ़) रासमंडल प्रार्थनामंत्र

बल्लभाय च गोपीनाम नमस्ते रासमण्डलम,
भूमिभरावताराय प्रसीद परमेश्वरम।
इति मंत्रम दशावृत्य पठेच्च प्रणमेद्धिरिम,
सर्वदा सुखमाप्नोति विचरणम पृथ्वीतले।

हे गोपीबल्लभ! इस रास में आपको प्रणाम। हे परमेश्वर! प्रसन्न होइए। आप पृथ्वी के भार नाश के लिए है। मन्त्र के 10 बार पाठ पूर्वक श्री हरि को प्रणाम करे तो सर्वदा सुख को पाकर पृथ्वी पर विचरण करता है।

ऊँचा गाँव- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

सख्यानविताय कृष्णाय रास क्रीड़ानविताय च
वेणीरम्य कृतार्थाय सु स्थलाय च तमो नमः।

हे सखियों के द्वारा युक्त श्रीकृष्ण! रासक्रीड़ा परायण! हे सुन्दर रासस्थल! आपको नमस्कार। आप वेणी के मनोहर के लिए है।

मयूरकुटी- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।(आदि वाराह)

नमः सखीसमेताय राधाकृष्णाय ते नमः,
विमलोत्सव देवाय ब्रजमंगल हेतवे॥

हे सखिगणों के साथ राधाकृष्ण! आपको नमस्कार। विमल उत्सव देने वाले हे देव! आप ब्रजमंडल के हित के लिए हैं।

गहरवन- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

वलास रासक्रीड़ाय कृष्णाय रमणाय च,
दशवर्ष स्वरूपाय नमो भानुपूरे हरे॥

हे विलास रासक्रीड़ा परायण! हे कृष्ण! हे रमन! आपको नमस्कार आप दस वर्ष की अवस्था धारण करके भानपुर में विराजमान है।

जावट- रासमंडल प्रार्थनामंत्र। (नारदीय)

चतुषषष्ठी सखिभ्यस्तु राधादिभ्यो नमो नमः,
कृष्णाय रमणायैव सप्तवर्ष स्वरूपिणे॥

हे चौसठ सखियों के साथ श्रीराधिके! आपको नमस्कार। हे सातवर्ष स्वरूप रमण श्रीकृष्ण! आपको नमस्कार।

विहारवन- शतकोटि गोपिका रासमंडल प्रार्थनामंत्र। (नारदीय)

गोपीभ्यो शतकोटीभ्यो स कृष्णाभ्यो नमोस्तुते,

देवादि परमोत्साह रसगोष्ठि नमोस्तुते।

श्रीकृष्ण के साथ शत कोटि गोपियों! आप सबको नमस्कार। हे देवताओं को परम् आनंद देने वाली रासगोष्ठि! आपको नमस्कार।

कोकिलावन- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

रासक्रीड़ा प्रदीप्ताय गोपी रमन सुन्दर,

नमः सुखमनोरम्य स्थलाय सिद्धिरूपिणे।

हे रासक्रीड़ा से प्रदीप्त मनोहर रास स्थल! गोपियों के रमन से सुन्दर! सिद्धि रूप आपको नमस्कार।

कदंबवन- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

राधारमण रम्याय गोपिका बल्लभाय ते,

रासमण्डलगोष्ठि आय नमस्तुते केलि रुपणे।

हे राधारमण से मनोहर! हे गोपिकबललभ! हे रासमण्डलगोष्ठि! केलिरूप आपको नमस्कार।

स्वर्णवन- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

अष्टादश सखियुक्तं राधाकृष्ण वरप्रद,

नमः सुवर्ण वन्याय रासगोष्ठी नमस्तुते।

हे अष्टादश सखियों से युक्त राधाकृष्ण! हे सुवर्ण रासगोष्ठि! आपको नमस्कार।

प्रेमवन (प्रेम सरोवर)- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

रासक्रीड़ोत्सवायैव ललिता युगलोत्सव,

नमस्ते रसगोष्ठाय मण्डलाय वरप्रद।

हे रासगोष्ठी! हे रासमण्डल! हे ललिता मोहन दोनों का उत्सव स्वरूप! नमस्कार। आप रासक्रीड़ा उत्सव के लिए हैं।

वृंदावन- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

गोपी क्रीडाभिरम्याय कृष्ण नित्याभिध्यायने,

नमो रत्न विभूषाय मण्डलाय कृतार्थिने॥

हे गोपियों की क्रीड़ा से मनोहर! हे कृष्ण के नृत्यस्थल! नाना रत्नों से विभूषित मण्डलरूप आपको नमस्कार है।

करहला- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

ललिता महदुत्साह गोपिका नृत्यरूपिणे,
कृष्णक्रीडाभिरम्याय मण्डलाय नमोस्तुते॥

हे ललिताजी के महान उत्सव स्वरूप! हे गोपिकाओं के नृत्यरूप! श्रीकृष्ण की क्रीड़ा से रम्य मंडल रूप आपको नमस्कार।

पिसाई (पिपासा वन) - रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

विहार सुख रूपाय मण्डलाय नमोस्तुते।
लोकानंद प्रमोदाय गोपिका बल्लभाय च।

हे विहारसुख रूप! हे मनुष्यों को सुख देने वाले रासमण्डल! गोपी बल्लभ आपको नमस्कार।

परासौली- रासमंडल प्रार्थनामंत्र।

परस्परोउद्भव प्रीति राधाकृष्ण विहारिणे।
परस्परबनायैव रासमण्डले नमस्तुभ्यं प्रसीद मे॥

हे परस्पर प्रेम से उत्पन्न राधाकृष्ण रासमण्डल! हे परस्पर नामक बन रासमण्डल! आपको नमस्कार है, आप प्रसन्न हों।

उपरोक्त लेख का आधार पूर्णत: श्रीनारायण भट्ट जी द्वारा रचित ब्रजभक्ति विलास है। भले ही रासलीला शुरू करने में मतभेद हैं, कुछ विद्वान रासलीला का श्रेय श्रीबल्लभाचार्य एवं हित हरिवंशजी आदि महात्माओ को दें या श्री नारायण भट्टजी को, किन्तु सच तो यह है कि -

शृंगार प्रधान रास में धर्म के साथ नृत्य और संगीत की प्रतिष्ठा कर उसका नेतृत्व ब्रज आराध्य श्रीकृष्ण को दिया और यही शैली राधा एवं ब्रजगोपियों की क्रीड़ाओं से युक्त होकर रासलीला के नाम से अभिहित हुयी। आस्थावान व्यक्ति रासलीला का अपनी भाष्य करते है। श्रीकृष्ण परब्रह्म है, राधा और अन्य गोपिकाएं जीवात्माएँ। रासलीला परमात्मा और जीवात्मा का मिलन है।

श्रीकृष्ण के सांसारिक चरित प्रस्तुत करने की आकांक्षा से रासलीला परम्परा आरम्भ हुयी। रासलीला एक ऐसी नाट्यशैली है, जिसमे रंगमंचीय प्रयोग की दृष्टि से अनंत संभावनाएं है, जो लोक को सदैव प्रेरित करती आयी है, करती रहेगी।

★★★

मथुरा डॉक पंजीयन संख्या-070/2022-24 पंजीयन संख्या UPHIN 2003/11917

भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ

(उ.प्र. संस्कृति विभाग)

व

उ0प्र0 ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा द्वारा संचालित

गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी

का

संयुक्त आयोजन

रासलीला प्रशिक्षण कार्यशाला

15 जून से 15 जुलाई, 2023

रासलीला प्रशिक्षण कार्यशाला में 11 से 16 वर्षीय बालक-बालिकाऐं प्रतिभाग कर सकते हैं।